AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 06 | July 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 36-39

निराला की कविताओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता

मंजु जसैल [1*] ***एंव डॉ. राम कुमार*** [2]

1. **** मंजु जसैल,*** शोधार्थी, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय,चुड़ेला, झुन्झुनूं, राजस्थान
2. **डॉ. रामकुमार** , सहायक प्रोफेसर- राजकीय महाविद्यालय, बीदासर चूरू, राजस्थान

~~~~~~

सारांश:-

छायावादी कवि निराला "ओज और औदांत" के कवि कहलाते हैं। निराला के काव्य में इस क्रांति-भावना के साथ बाहरी विषमता के प्रति उनकी दृष्टि विद्रोहात्मक है। जो उन्हें प्रगतिशील कवि का महत्व देती है। सामाजिक भूमिका पर समानता और असमानता का पूरा प्रत्यय उनके काव्य में पाया जाता है। अपने इस प्रगतिशील स्वर में निराला की काव्य चेतना समसामयिक है, सभी कवियों में प्रखर भी है। उनकी ओजस्विता सर्वविदित है। निराला इस युग के प्रशस्त और उदात्त भावना के कवि कहे जाते हैं।

मुख्य शब्द:- आधार स्तंभ, निराला, असमानता, सर्वत्र, महिषादल, बंधुत्व, समता, न्याय, मुखरित, विद्रोही, जागरूकता, परतंत्रता, खुशबू, रंगोआब, कैपिटलिस्ट, जन-मानस, विषमता, परवशता, मार्क्सवाद।

प्रस्तावना:-

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य जगत के प्रसिद्ध कवि एवं छायावाद के चार आधार स्तंभ में प्रमुख स्थान रखते हैं, उनका जीवन बड़ा ही दुखद रहा है। पिता का असामयिक निधन तथा युवावस्था में ही पत्नी का निधन, फिर पुत्री सरोज का चला जाना उनके लिए अत्यधिक दुखद जीवन रहा।

निराला ने स्वयं 'सरोज-स्मृति' में कहा है- "

दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूं जो आज नहीं कही।"

लेकिन वे किसी भी विपत्ति एवं परिस्थिति के आगे नहीं झुके। निराला की कविता में मानव की पीड़ा, परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश तथा अन्याय एवं आसमानता के प्रति विद्रोह की भावना सर्वत्र व्याप्त है।

CORRESPONDING AUTHOR:	REVIEW ARTICLE
Manju Jasail Research scholar, Shri. JJT University, Jhunjhunu, Churela, Rajasthan Email: rkbchuru@gmail.com	
~~~~~~

दूधनाथ सिंह ने निराला के संदर्भ में कहा है- "संसार के किसी भी भाग में ऐसे कवि बहुत कम होंगे, जो रचना स्तरों को अनेक रूपों को साथ-साथ पहन कर सके और लगातार अनेकमुखी कविताएं रचने में समर्थ हो।इसका प्रमुख कारण निराला ने जीवन को एक ही साथ अनेक स्तरों पर जीया है।"

निराला की समस्त रचनाओं में आक्रोश व विद्रोह की प्रधानता प्रमुख रूप से देखी जा सकती है।

निराला और उनका काव्य :-

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1868 ई. में बंगाल की महिषादल राज्य में हुआ। निराला का संपूर्ण जीवन कष्टप्रद रहा। छायावादी कवि के साथ-साथ निराला के काव्य में प्रगतिवादी चेतना ज्यादा मुखरित हुई है। जिसमें व्यक्तिगत पीड़ा भी उभर कर उनकी कविताओं में प्रमुखता के साथ आई। निराला की प्रमुख रचनाएं- अनामिका, परिमल,अपरा, गीतिका, बेला तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, नए पत्ते, अर्चना, आराधना।

निराला के इन समस्त रचनाओं में आक्रोश व विद्रोह की प्रधानता दिखाई देती है। तमाम कष्ट और बाधाओं ने उन्हें सचेत और जागरूक कवि बना दिया। निराला जन-मानव के कष्ट,परेशानियों के विरुद्ध हमेशा आवाज उठाते थे। समाज में व्याप्त सामाजिक विषमता के विरुद्ध हमेशा लड़ते रहे हैं। इसकी अभिव्यक्ति निराला की निम्न पंक्तियों के माध्यम से देखु जा सकती है-

"चाट रहे जूठी पातल,वे कभी सड़क पर खड़े हुए। और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अड़े हुए।"

निराला के काव्य में अन्याय व असमानता के प्रति विद्रोह:-

छायावादी कवियों ने भारतीय जन-मानस में जोश, जुनून, उत्साह, स्वतंत्रता की चेतना जगाने का काम किया है। निराला की कविता में 'जागो फिर एक बार' इन्हीं बातों के लिए प्रेरणा का संचार करती है-

"शेरों की मांद में आया है आज सियार,

जागो फिर एक बार।" इसी प्रकार बादल राग कविता में भी निराला ने बादल से गुजारिश की है, वह भारत के दीन-हीन, गरीब किसानों की पुकार सुनकर विप्लव मचाने के लिए अवश्य पहुंचे। जीर्ण बाहू है, शीर्ण शरीर,

तुझे बुलाता कृषक अधीर,

ऐ विप्लव के वीर,

चूस लिया है उसका सार,

हाड़ मात्र ही है आधार,

ऐ जीवन की पारावार।"

निराला की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि वे सामाजिक विषमता को समाप्त कर, समता स्थापित करना चाहते थे। उनकी कविता में उन्होंने मार्क्सवाद बनाम मानवतावाद को केंद्र में रखकर कविता की रचना की।

रामविलास शर्मा ने कहा है-

" हिंदी के साहित्य को एक नई दिशा की ओर गति देना ऐतिहासिक आवश्यकता थी। एक युग की भूमि पार करके निराला उसकी सीमा तक पहुंच गए थे। अब दूसरे युग की भूमि पर कदम उठाना जरूरी था, निराला ने यह कदम उठाया।"

निराला छायावादी कवियों में सबसे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। जिनकी की कविता में तत्कालीन समाज में जी रहे मानव की पीड़ा, परवशता एवं परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश एवं अन्याय तथा असमानता के प्रति गहरी विद्रोह की गूंज सुनाई देती

है। उनकी दीर्घ कविता 'तुलसीदास' तथा 'राम की शक्ति पूजा' का भी उनके गहन चिंतन की अभिव्यक्ति का परिचय देते हैं, तो 'कुकुरमुत्ता', 'वह तोड़ती पत्थर' आदि कविताओं में निराला पूंजीवादी व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हैं। इसीलिए निराला को आधुनिक युग का सबसे युगांतकारी कवि माना जाता है।

नंदकिशोर नवल ने कहा-

" 'कुकुरमुत्ता' निराला की महत्वपूर्ण उपलब्धि इस कारण है, कि इस कविता में जैसे उन्होंने अपने सर्जनात्मक लक्ष्य को पा लिया है,और उनके सामने सृजनात्मकता चुनौती थी। उसका सफलतापूर्वक मुकाबला किया है।"

गुलाब के प्रति पुकार है -
अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत है जो पाई, खुशबू, रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट,
बहुतों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रखा, खिलाया जाड़ा धाम।"

इस संदर्भ में नामवर सिंह ने कहा-

"कुकुरमुत्ता कविता अपनी अंत:प्रक्रिया में मार्क्सवाद की पक्षधरता या साम्राज्यवाद के विरोध में लिखी गई कविता नहीं है यह उस निराला की कविता है। यह उस निराला की कविता है जिस निराला पर सन् 1937 में

कलावादी और मार्क्सवादी दोनों प्रहार कर रहे थे। अंग्रेजी कविता और कवियों की नकल पर, हिंदी में भी आधुनिक और आधुनिकता बोध के नाम पर कल में चलाई जा रही थी। कुकुरमुत्ता इन कलमो व्यंग्य पर करता है और अपनी मौलिक और स्वत: उस पर पैदा होने की अहंमन्यता घोषित करता है।"

निराला जी अपनी कविता के माध्यम से शोषण मुक्त,अन्याय मुक्त,भयमुक्त, समाज की स्थापना करना चाहती थे। वे स्वतंत्रता,समता, न्याय और बंधुत्व के समर्थक थे। अपनी कविता विधवा में वे उसकी दयनीय स्थिति की चर्चा करते हैं।

"वह तोड़ती पत्थर जिसे देखा,
मैंने इलाहाबाद के पथ पर।"

उपसंहार:-

निराला एक विद्रोही कवि के रूप में जाने जाते हैं, वे काव्य की विषय वस्तु को नवीनता का समावेश करने वाली कवि थे। निराला की कविता सामाजिक चेतना एवं प्रयोगशील प्रवृत्ति को निरूपित करने वाली कविता है। इस प्रकार उनका व्यंग्य वैविध्य पूर्ण है। निराला स्वभावत: रुढ़ियों विरोधी एवं क्रांतिकारी कवि थे। रुढ़ियों का विरोध उनकी कविता में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। समाज के शोषण का अंत करने के लिए क्रांति का आह्वान करते हैं। निराला ने जैसे अपने जीवन में किसी बंधन को स्वीकार नहीं किया, वैसे ही अपने साहित्य में में वह किसी बंधन की सीमा में कैद नहीं रहे। इस युग का सबसे बड़ा विद्रोही और जीवन प्रेमी कवि निराला ही है। निराला के व्यक्तिगत जीवन पर राजनीतिक व सामाजिक चिंतन व सबसे गहरा असर डाला वह महात्मा गांधी थे। उनके जीवन में सुख और आशा ही नहीं बल्कि पीड़ा, निराशा और पराजय भी है। जिसे वह संघर्ष करते हैं और नया रास्ता निकालते हैं। डॉ रामविलास शर्मा के अनुसार- " उनके साहित्य के केंद्र में वह मनुष्य है जो श्रम करता है संपत्ति और सुख के साधनों से वंचित है, विशेष परिस्थितियों से जूझता है, गिरता है फिर आगे बढ़ता है।

निराला के साहित्य में कर्मठता,वीरता, धैर्य,आंतरिक आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता है।"
अन्ततः हम कह सकते हैं कि निराला की कविताओं में प्रमुख रूप से आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. राम विलास शर्मा- 'निराला' पृष्ठ-106
2. दूधनाथ सिंह- निराला: आत्महंता आस्था, पृष्ठ-16
3. नंद किशोर 'नवल' - निराला कवि- छवि, पृष्ठ-193
4. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी- हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-556
5. नामवर सिंह- शोध पत्र- निराला,नई अर्थवता की तलाश
6. राम विलास शर्मा- निराला की साहित्य साधना, पृष्ठ-72
7. राम चन्द्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-51
8. रामविलास शर्मा- निराला, पृष्ठ-100

■ ■ ■